

Shri Raghunatha Temple MSS. I.

JAMMU

No.

२६३  
क

Title

शक्तिस्तोत्रम्

Author

Extent

५ पत्र

Age

Subject

स्तोत्र

शारिकास्तो-

नं. १०६३

6095

F-4 complete

✓  
minor

2 pages

श्रीशारिकाभगवत्येनमः॥ॐवीजैः  
 सप्तभिरुज्ज्वलाकृतिरसौयासप्तस  
 प्तद्युतिः॥सप्तर्षिप्रणतोऽत्रिपंकज  
 युगायासप्तलोकार्तिहृत्॥काशमी  
 रप्रवरेणमथ्यनगरेप्रसुम्नपीठे



शा  
१

स्थिता॥ देवी सप्तक संयुक्ता भगवती  
श्रीशारिकापातुनः॥ ॐ जय भगव  
ति॥ विन्ध्यवासिनि॥ कैलासवासिनि  
शमशानवासिनि॥ क्लृप्तादिणि॥ का  
लायनि॥ कान्धायनि॥ हिमशिदि

जनये॥ कुमारमाता॥ गोविन्दभगि  
नि॥ शीतिर्कटाभरणे॥ अष्टादशभु  
जे॥ भुजगवलयमंडिते॥ केसरहारा  
भरणे॥ जय॥ खड्ग॥ त्रिशूल चक्र उम  
र॥ सहसर॥ चषक॥ कलश॥ शार॥ चाप

शा

२

२

वरदा॥भय॥पाश॥सुस्तक॥कपा  
ल॥खट्वांग॥गदा॥सुसल॥तोमर  
वरहस्ते॥कृपापरे॥भूतविधायि  
नि॥चंडिके॥चंडचंडे॥किरातवी  
र्ये॥ब्रह्माणि॥रुद्राणि॥नारायणि



ब्रह्मचारिणि॥ दिव्यतपोविधायि  
नि॥ वेदमाता॥ गायत्रि॥ सावित्रि ६  
सरस्वति॥ सर्वाधारे॥ सर्वस्वरूपे ६  
सर्वेश्वरी॥ विश्वेश्वरि॥ विश्वकर्त्री ६  
समाधिविप्रान्तमधि॥ विन्मधि

श्री  
३

3

चिन्तामणिस्वरूपे॥ कैवल्ये केश  
वस्वरूपे॥ शिवे निराश्रये निराम  
यपदे॥ ब्रह्मविस्ममहेस्वरनमिते  
मोहनि॥ तोषणि॥ भयंकरनाशि  
नि॥ काले॥ कालकिंकरमथनि १



कालाग्निशिखे॥ कालरात्रे॥ अजे  
नित्ये॥ सिंहरत्ने॥ महारत्ने॥ योगर  
त्ने॥ योगेश्वरनिमित्ते॥ भक्तजनेभ  
क्तिजनवत्सरे॥ स्वरप्रिये कारुण्ये  
दुर्गे॥ दुर्जये॥ हिरण्ये॥ शरण्ये॥ हिते॥

शा.  
५

शारिके ऊरु मे दयाम् ॥ प्रद्युम्न १  
शिवरासीने मातृ चक्रोपशीभि  
त्ता ॥ पीटे चरैरीशिला रूपं शारिको  
प्रणमाम्यहं ॥ अमा चैव तत्र कामा  
च चार्वर्गी टंकधारिणी ॥ तारा च १

पार्वतीचैवयदिणीशारि.  
काष्टमी ॥॥॥ इति श्रीपारिका  
स्तोत्रम् ॥ ॐ ॥



८८



८८  
१९